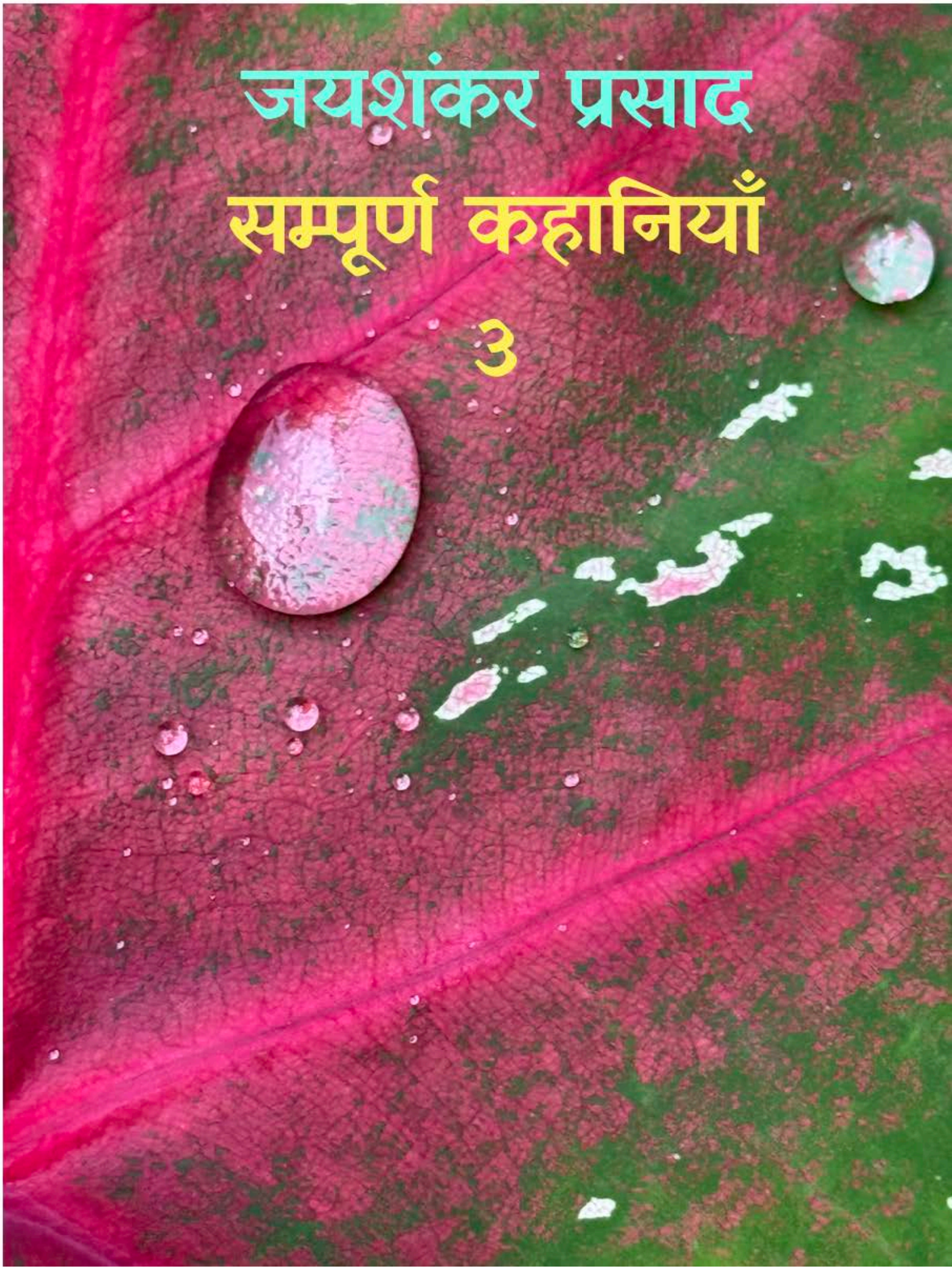
जयशंकर प्रसाद
सम्पूर्ण कहानियाँ
3

जयशंकर प्रसाद सम्पूर्ण कहानियाँ 3

कहानी संग्रह

जयशंकर प्रसाद

अनुक्रम

चूड़ीवाली	3
अपराधी	14
प्रणय-चिन्ह	22
रूप की छाया	32
ज्योतिष्मती	38
रमला	43

चूड़ीवाली

‘‘अभी तो पहना गई हो।’’

“बहूजी, बड़ी अच्छी चूड़ियाँ है। सीधे बम्बई से पारसल मँगाया है। सरकार का हुक्म है; इसलिये नयी चूड़ियां आते ही चली आती हूँ।’’

‘‘तो जाओ सरकार को ही पहनाओ, मैं नहीं पहनती।’’

“बहूजी! जरा देख तो लीजिये।’’ कहती मुसकराती हुई ढीठ चूड़ीवाली अपना बक़्स खोलने लगी। वह 25 वर्ष की एक गोरी छरहरी स्त्री थी। उसकी कलाई सचमुच चूड़ी पहनाने के लिये ढली थी। पान से लाल पतले-पतले ओंठ दो तीन वक्रताओं में अपना रहस्य छिपाये हुए थे। उन्हें देखने का मन करता, देखने पर उन सलोने अधरों से कुछ बोलवाने का जी चाहता। बोलने पर हँसने की इच्छा होती और उस हँसी में शैशव का अल्हड़पन, यौवन की तरावट और प्रौढ़ा की-सी गंभीरता बिजली के समान लड़ जाती।

बहूजी को उसकी हँसी बहुत बुरी लगती, पर जब पंजों में अच्छी चूड़ी चढ़ाकर, संकट में फँसाकर वह हँसते हुए कहती—“एक पान मिले बिना यह चूड़ी नहीं चढ़ती।” तब बहूजी को क्रोध के साथ हँसी आ जाती और उसकी तरह हँसी की तरी लेने में तन्मय हो जातीं।